Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 25/July/2024 IJRAW: 2024; 3(8):244-247 Accepted: 28/August/2024

रामदरश मिश्र के उपन्यासों में अभिव्यक्त स्थानीय संस्कृति

***[1]डॉ. गीता संतोष यादव और [2]अनुष्का प्रदीप पाचंगे**

*[1]शोध निर्देशिका एवं सहयोगी प्राध्यापिका, एस.एम्.आर.के. माहिला महविद्यालय, नाशिक, महाराष्ट्र, भारत।

[2]शोध छात्रा, श्रीमती नाथीबाई ठाकरसी महिला विद्यापीठ, मुंबई, महाराष्ट्र, भारत।

सारांश

हिन्दी साहित्य के देदीप्यमान लेखकों में डॉ. रामदरश मिश्र का स्थान महत्वपूर्ण है। मिश्र जी ने साहित्य की लगभग सभी विधाओं पर अपनी कलम चलाई है। स्वतंत्रता पूर्व से लेकर अबतक का संपूर्ण लेखा-जोखा उनके साहित्य में विद्यमान है। इस शोध-आलेख में उत्तरभारत की स्थानीय संस्कृति को दर्शाने का प्रयास मिश्र जी ने अपनी रचनाओं में किया है। दिल्ली, गुजरात, गोरखपुर की स्थानीय संस्कृति का चित्रण मिश्र जी ने अपने उपन्यासों में किया है। स्थानीय संस्कृति का अध्ययन करने के लिए मिश्र जी के उपन्यास पानी के प्राचीर, जल-टूटता हुआ, सूखता हुआ तालाब, अपने लोग, आकाश की छत, रात का सफर, थकी हुई सुबह, परिवार, बीस बरस आदि उपन्यासों को आधार बनाया गया है।

सामग्री (Martial): स्थानीय संस्कृति का अध्ययन करने के लिए मिश्र जी के उपन्यास पानी के प्राचीर, जल-टूटता हुआ, सूखता हुआ तालाब, अपने लोग, आकाश की छत, रात का सफर, थकी हुई सुबह, परिवार, बीस बरस आदि उपन्यासों को आधार बनाया गया है।

शोध-पद्धति (Method): प्रस्तुत शोध-कार्य के लिए विवेचनात्मक शोध-पद्धति, समीक्षात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है।

मुख्य शब्द: डॉ. रामदरश मिश्र, स्थानीय संस्कृति, 'बिना दरवाजे का मकान "सूखता हुआ तालाब", जल टूटता हुआ, रात का सफर, अपने लोग, थकी हुई सुबह, परिवार आदि।

प्रस्तावना

स्थानीय संस्कृति का तात्पर्य है स्थान-विशेष की संस्कृति, वहाँ के रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा आचार-विचार, व्यवहार आदि का विस्तृत वर्णन। रामदरश मिश्र के उपन्यासों में पूर्वी उत्तर प्रदेश की स्थानीय संस्कृति का बड़ा हो सुंदर चित्रण हुआ है।

नवीन स्थितियाँ और युवा पीढ़ी स्वयं को स्थानीय संस्कृति के घेरे से बाहर ला रही है। परंपरागत संस्कारों का पतन होने के कारण नवीन जीवन मूल्यों का विकास हो रहा है। फलस्वरूप अन्तजातीय विवाह का प्रचलन हो रहा है। यह जागृति गाँवों में घुसते हुए शहर के कारण हो रही है। किन्तु कहीं-कहीं अंधानुकरण की दौड़ ने खंडित होती हुई लोक आस्थाओं को भी जन्म दिया है।

रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा आदि के माध्यम से स्थानीय संस्कृति की अभिव्यक्ति होती है। क्योंकि ये सभी तत्व भौगोलिक और सांस्कृक्तिक परिवेश पर निर्भर करते है। रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्रामीण अंचल का सुविस्तृत चित्रण हुआ है। इसलिए रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा पर उसका स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है।

ग्रामीण परिवेश की अपनी कुछ मान्यताएँ होती हैं। यही मानयताएँ गाँव वालों के लिए नियम का काम करती है। चूँकि ये नियम कठोर नहीं होते, इनमें शिथिलता होती है इसलिए इन्हें रीति-रिवाज कहा जाता है। रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ऐसे रीति-रिवाजों को स्थानीय संस्कृति के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

'सूखता हुआ तालाब' उपन्यास में देवप्रकाश का भाई अवतार एक पासिन के साथ आशनाई करता हुआ पकड़ा जाता है। इसलिए गाँव के लोग उसका बाइकाट कर देते हैं किंतु जैसा ऊपर कहा गया है कि रीति-रिवाज में सुविधानुसार शिथिलता भी पाई जाती है। देवप्रकाश के यहाँ खाना खाने गाँव के दो-तीन आदमी ही आते हैं। वे लोग भी नारायणपुर के दुबे लोग हैं। शिवलाल, रामदेव और धर्मेंद्र ने नारायणपुर जाकर वहाँ के दूबे लोगों को समझाया-बुझाया कि वे धर्मेंद्र के यहाँ भोज-भात में न जायें, लेकिन वे लोग इनका तिरस्कार कर देते हैं और साफ-साफ कहते हैं कि "जब हम लोगों ने अपने गाँव के शंकर का बहिष्कार किया था. तो आप लोगों ने लोटा उठाकर उसे पवित्र कर दिया। फिर किस मुँह से हमें मना कर रहे हैं।" [1] शंकर का बहिष्कार अंतर्जातीय विवाह करने के कारण हुआ था। उसके गाँव वाले कहते हैं कि यदि शंकर कथा-वार्ता सुनता है, तीर्थ-जप करता है, तो वे उसे अपने में मिला लेंगे किंतु अंतर्जातीय विवाह करने का साहस रखने वाला शंकर इन सब बातों को ताक पर रख देता है। अंततः मजबूरन गाँववाले उसे अपने साथ मिला लेते हैं। पाँडेपुर गाँव में गड़ंत, भूत, पेटमडुआ अक्सर गाँव में सभी को

***Corresponding Author:** डॉ. गीता संतोष यादव

परेशान करते हैं। इसलिए गाँव वाले अपना भूत-प्रेत, पेटमडुआ दूसरे के ऊपर अर्थात् अहिरौली के अहिरों पर डालने का आग्रह ज्यातिषी जी से करते हैं किन्तु 'ज्योतिषी जी इसे अमानवीय कहते हुए पेटमडुआ को नदी में फेंकने की बात करते हैं।" [2]

'उपन्यास में फाग खेलने के बाद चौताल और कबीर गाने का रिवाज है।–

'सदा अनन्द रहे एहि द्वारे
जिये से खेले फाग रे
डम्पर मटाक धिना डम्मर मटाक धिना।

भवानी पाँडे इस समारोह के नायक बनते हैं। वे दुनिया में 364 दिन जहाँ कहीं रहें-तराई में करताल लेकर या चेलों के यहाँ ज्योतिषी बनकर, किंतु 365 वें दिन वे औरतों को अखंड और व्यापक सुहाग का आशीर्वाद देने अपने गाँव जरूर पधारते हैं। यह परंपरा बहुत पहले से चली आ रही है।' [3]

गाँवों में नागपंचमी के अवसर पर मेंहदी लगाने का रिवाज है। इसलिए बाढ़ जैसी कठिन स्थितियों में बाढ़ को फाड़ते हुए लोग मेंहदी खरीद लाते हैं। मेंहदी तो लगनी ही चाहिए त्योहार के दिन। लड़के-लड़कियाँ थोड़ी-थोड़ी मेंहदी हथेलियों पर चिपकाए नाच-नाच कर गाते हैं- 'अतलवा क पनिया पतलवा जा, हमार-मँहँदिया झुरा जा।" [4] गाँव में शादी-ब्याह के लिए दहेज लेने का रीति-रिवाज है। मास्टर तिवारीअपनी बेटी गीता के लिए वर ढूंढ-ढूँढ़कर परेशान है। 'सकुलपुरी के सुकुलजी-ये मामखोर के सुकुल हैं। बेटा मिडिल स्कूल में कई साल में फेल होता है, दरवाजे पर एक बैल है, दहेज माँगते हैं डेढ़ हजार..... सुकुल हैं मामखोर के न ! कुरकुरा सुकुल ! सुना है, लड़के का चाचा, पक्का चोर है, कई बार जेल काट आया है, किंतु इससे क्या? सुकुल तो हैं, ये हैं मिसरौली के मिसिर जी, दो-बैल की खेती है, किन्तु लड़का मैट्रिक पास करके किसी दफ्तर में साठ रूपया पा रहा है, बाप कहता है कि लड़का साहब है। माँगते हैं दो हजार ! ये हैं कैथपुरा के दूबेजी अपने बेटे की शादी के लिए बड़ा जोर मार रहे हैं, किंतु क्या है उनके पास।" [5] लड़का अपढ़ दो बीघे खेत । क्या खिलाएगा गीता को? और कुछ हो भी, तो दूबे पाँड़ों के यहाँ कौन करेगा शादी धारकों के यहाँ। 'जाँति-पाँति, गरीबी, दहेज आदि अनेक ऐसी समस्यायें हैं जो रीति-रिवाज मानने के कारण हो रही हैं। यही समस्या कमलेश के मामा रामसहाय के सामने है। वे मजबूरन अपनी बेटी शोभा का विवाह दुहाजू से तय करना चाहते हैं किंतु दुहाजू की उम्र अधि क होने के कारण यह रिश्ता नहीं तय करते।" [6] बाद में शोभा का विवाह एक अच्छे घर में तय होता है। इसी बीच हिंदू-मुस्लिम दंगे होते हैं और मुसलमान शोभा को उठा ले जाते हैं। कुछ दिनों बाद शोभा बेदाग घर पहुँच आती है। शोभा के विवाह का दिन आ जाता है। बारात गाँव के एक प्राइमरी स्कूल में ठहरती है। समय हो जाने पर भी बारात द्वारपूजा के लिए नहीं निकलती, तो कुछ लोग समधी से मिलने जाते हैं। कमलेश के मामा को बुलाकर समधीजी बुरा-भला कहते हैं।' [7] बारात वापस लौट जाती है।

अहमदाबाद के लोगों की एक विशेषता यह है कि वे अपने अतिथियों के लिए ग्राम पंचायत से लोकनृत्य का आयोजन करते हैं। [8] इस तरह के लोकनृत्यों का आयोजन यदि समय-असमय को ध्यान में रखकर हो, तो ठीक रहता है; किंतु 'बिना दरवाजे का मकान'में नवरात्र के समय दिन-रात बजने वाले लाउडस्पीकर और भजन-कीर्तन के कारण दीपा की नींद खराब होती है।' [9]

होली के अवसर पर गाये जाने वाले चौताल की परंपरा धीरे-धीरे बंद हो रही है। 'बीस बरस'उपन्यास में इसे विशेष रूप से बताया गया है। 'परिवार' उपन्यास में काशीनाथजी की सेवानिवृत्ति पर एक समारोह आयोजित होता है। प्रायः किसी के सेवानिवृत्त होने पर उसके अभिनंदन के उपलक्ष्य में समारोह आयोजित करने का रिवाज हो चला है। इसमें सभी लोग काशीनाथ के सरल, निश्छल स्वभाव को प्रशंसा करते हैं। उनकी सीधी-सादी वेशभूषा, प्रेम और सेवा की सराहना करते हैं। ऐसा लगता है कि काशीनाथ जी उनके भीतर समाये हुऐ हैं। इस प्रकार के अनेक रीति-रिवाज मिश्र जी के उपन्यासों में प्रस्तुत हैं, जिनमें स्थानीय संस्कृति के भाव व्यक्त हुए हैं।

रामदरश मिश्र जी के उपन्यासों में स्थानीय संस्कृति को केन्द्र में रखकर लोगों के रहन-सहन का उल्लेख हुआ है। जिसके घर के लोग परदेश में रहते हैं। उसके घर पेट्रोमैक्स, कालीन, फोनोग्राम, नई-नई दरियाँ वगैरह त्रगैरह होती हैं। जिसके घर के लोग अहमदाबाद जैसे मिलों की नगरी में कमाते हैं, उसके यहाँ अच्छे-अच्छे कपड़े न हों तो उनकी शान में कमी आती है।" हर खाते-पीते घर के लोग बाहर कमाने वाले सदस्यों से बहुत-बहुत उम्मीदें पालते हैं। 'दूसरा घर'उपन्यास के मिस्टर गोयल बहुत ही संपन्न हैं। इनके बच्चे रबर की चप्पलें पहनते हैं, बिना इस्त्री किए हुए कपड़े पहनकर स्कूल जाते हैं। इनकी पत्नी हमेशा डरी और सहमी रहती है और एक-एक पैसे के लिए पति की मुखोपक्षी बनी रहती है। ये हजरत ऑफिस से निकलकर क्लब में जाते हैं। अपनी प्रेमिकाओं के साथ रंगरेलियाँ मनाते हैं, पीते हैं और धुत होकर काफी रात गए लौटते हैं। घर में इन्हें कोई टोकने वाला नहीं है। पत्नी मामूली पढ़ी-लिखी है। सोचती है कि कहा-सुनी करूँगी तो घर से निकाल देंगें, फिर कहाँ जाऊँगी, रोटी के लाले पड़ जाएँगे। कभी-कभी मिस्टर गोयल प्रेमिकाओं को घर पर भी लाते हैं और पत्नी से उनका सेवा-सत्कार करवाते हैं पत्नी कलेजे पर पत्थर रखकर पति का आदेश मानती रहती है और प्रेमिकाएँ हँसती-खिलखिलाती रहती हैं। बच्चे भी निरीह भाव से सब कुछ देखते रहते हैं। जनाब बच्चों से कभी हँसते-बोलते नहीं, एक क्रूर ठंडेपन से भरी वाणी में उनसे कभी-कभी कुछ पूछ लेते हैं। इसलिए बच्चे भी हमेशा डरे-डरे रहते है। इसी उपन्यास के शास्त्री जी बड़े ही धूर्त और लंपट हैं। वे अपनी गाँव की पत्नी को छोड़कर पैसे के लालच में रमा से विवाह करते हैं और बाद में बड़ौदा की सुधा नामक नर्स को अपने प्रेमजाल में फाँसते हैं। शास्त्रीजी के एम.एल.ए. होने पर सुधा बड़ौदे से उन्हें बधाई देने आती है तब रमा और सुधा दोनों सत्य परिस्थिति से अवगत होती हैं। रमा को पता है कि शास्त्रीजी से पूछने पर वह क्या कहेंगे। वे कहेंगे- 'रमा, मैंने तुमसे शादी की थी तो इसलिए कि मेरी पहली पत्नी बाँझ थी। अब अपनी इतनी बड़ी सम्पत्ति है, इसका कोई वारिस तो होना चाहिए। तुमसे शादी किए हुए कितने साल हो गए, बच्चा नहीं हुआ तो बच्चे के लिए कुछ करना ही पड़ेगा न। इस प्रकार अपना दोष दूसरों पर मढ़ने की लोगों को आदत हो गयी है। जिससे स्थानीय संस्कृति प्रभावित हो रही है क्योंकि भारतीय संस्कृति में एक बार अग्नि को साक्षी मानकर जिसके साथ सात फेरे ले लिए जाते हैं उसी के साथ पूरी जिंदगी निभाते हैं।

'बीस बरस' उपन्यास का मनमोहन अपने बेटे स्वतंत्र को गाँव से शहर बुलाता है। मनमोहन के चाल-ढाल ठीक नहीं है। वह शराब पीता है और नित्य नयी-नयी औरतें उनके घर आती हैं। मनमोहन स्वतंत्र को पढ़ाई-लिखाई के समय उठा देते हैं।स्वतंत्र को पढ़ने लिखने में कठिनाई होती। वह नौवीं कक्षा में फेल हो जाता है। इस गम में वह पिताजी की शराब पी लेता है। पिताजी के पूछने पर अब तेरा क्या होगा रे? तू जिन्दगी में क्या करेगा? वह प्रत्युतर देते हुए कहता है- 'बहुत कुछ होगा। आपका सच्चा बेटा हूँ। आप भी तो दसवीं फेल हैं। आप भी तो बचपन में क्या-क्या उपद्रव करते रहे हैं। आप भी तो शराब पीते हैं, आप भी तो आँटियाँ लाते रहते हैं और बिना कोई नौकरी-चाकरी किये इतना पैसा उगाहते रहते हैं। तो मैं क्यों नहीं कर सकता? मैं तो आपसे ज्यादा लायक निकलूँगा। आप तो बिना ट्रेनिंग के इतने योग्य निकले थे, मुझे तो अपकी ट्रेनिंग मिली है।" मनमोहन के रहन-सहन का प्रभाव उसके बेटे स्वतंत्र पर पड़ता है। वह भी मदिरा पान करने लगता है। पिता के प्रति उसके मन में

बहुत आक्रोश है। पिता के व्यवहार का उसके जीवन में विपरीत प्रभाव पड़ता है।

'बीच का समय' उपन्यास में रीता के माता-पिता अफ्रीका में रहते हैं। उसका गाँव कँकरिया झील से 20-25 मील दूर है जहाँ उसके मौसा-मौसी रहते हैं। यहाँ वह अपनी विधवा बुआ के साथ अकेली रहती है।" जो प्रो. शील के साथ उन्मुक्त रूप से पेश आती है। 'रात का सफर'उपन्यास की ऋतु मजिस्ट्रेट राकेश की एकलौती पुत्री है। पति-पत्नी हमेशा उसका ध्यान रखते है। ऋतु एक संपन्न वातावरण में पलती है। फिर भी वह एक संवेदनशील लड़की है। औरों के दुःखों और मानवीय मूल्यों से स्पंदित वह एक सुरुचिपूर्ण लड़की के रूप में विकसित हुई है, उसमें अपनी भाषा और कला के प्रति गहरी अभिरुचि है। कविता, संगीत, चित्रकला में उसकी रुचि ही नहीं, गति भी है।" ऋतु का विवाह एम.बी.बी.एस. कर रहे दिनेश से होता है। अलीगढ़ में डॉक्टर के मकान में तीन कमरे थे, एक सँकरा-सा आँगन था। एक कमरे में डॉक्टर के पिता वकील साहब की बैठक थी। दूसरे कमरे में वह बैठाई गयी थी। तीसरा कमरा पहली मंजिल पर था।" ऋतु इस घर में आकर असहजता या परायेपन का अनुभव नहीं करती। उसके भीतर तो एक बनने वाला संसार महक रहा था। किंतु ससुराल वालों तथा पति दिनेश की असहृदयता से ऋतु का सपना टूट जाता है।

राकेश जी के विचारों के समान 'परिवार'उपन्यास के काशीनाथ भी है। वे मामूली आमदनी वाले क्लर्क हैं। ऐसे परिवारों की बेटियाँ जैसे रहती हैं वैसे सत्या भी रह सकती थी-दबी-दबी सी, तमाम वर्जनाओं से लदी-फंदी सी। लेकिन नहीं काशीनाथ जी के मन में उत्साह था कि उनकी बेटी पढ़े-लिखे बेटों से अपने को कम न समझे और उनकी आर्थिक स्थिति की कमजोरी कहीं उसमें हीनता का भाव न भर दे। इस प्रकार रामदरश मिश्र जी के उपन्यास में भिन्न-भिन्न समाज और रहन-सहन के लोग दिखाई देते हैं।

व्यक्ति का खान-पान प्रायः उसकी संस्कृति के अनुरूप होता है। इसमें उस स्थान विशेष की सहज उपलब्ध चीजों का समावेश होता है। रामदरश मिश्र के उपन्यासों में नेवता का उल्लेख हुआ है। शादी-ब्याह के अवसर पर लोग अपने घर पर मेहमानों को भोजन के लिए आमंत्रित करते हैं, उसे नेवता कहा जाता है। मिश्र जी ने अपने उपन्यासों में इसका वर्णन किया है। 'टीसून बेनी काका से बिशुनपुर के बाबू साहब के यहाँ खाई गई सोहारी की तारीफ करता है। तब बेनी काका मुंशी गनेशप्रसाद के यहाँ खाये गये व्यंजनों की प्रशंसा करते हैं। खाली पूड़ी-सोहारी को बात कौन कहे, चटनी, अचार, मिठाई, तरकारी के बीसों प्रकार का वर्णन करते हैं।" 'बीस बरस'उपन्यास में गुड़, चावल, बिसाती, हलवाई की दुकान का वर्णन है। हलवाई की दुकान की सजी मिठाइयाँ स्कूल से लौटने वाले बच्चों को अपनी तरफ आकर्षित करती हैं।

'परिवार'उपन्यास की सत्या के पिताजी एक बार बहुत बीमार पड़ जाते हैं। तभी एक वैद्यजी उन्हें बकरी का दूध पीने की सलाह देते हैं, जिससे छत्तीस रोग दूर होते हैं। सचमुच बकरी का दूध बड़ा गुणकारी और खान-पान में उपयुक्त है। दही-चूरे की ही भाँति खान-पान में जौ और चने का भूजा काम में लाया जाता है।बरसात के मौसम में कभी-कभी बच्चे पाकड़ के पेड़ में से गोदा खाने के लिए आ जाते हैं। बच्चों के लिए बरसात में यही एक चीज खाने लायक रहती है। सत्या के पिता जब भी ऑफिस से घर आते हैं। तब प्रायः कुछ न कुछ बच्चों के लिए लाते हैं जैसे, किशमिश, गरी या चॉकलेट।" गाँवों में दही-चूरा खाने के विशेष प्रथा है।

सत्या के फूफा शर्मा जी एक दिन सत्या के पिता के दोस्त चौबे जी के यहाँजाते हैं। वहाँ वे जमकर पकौड़ियाँ खाते हैं और घर आकर उन पकौड़ियों की प्रशंसा करते हैं। सत्या की माँ के हाथों की पकौड़ियाँ शर्माजी को नहीं भाती। एक दिन जब चौबेजी आते हैं और सत्या की माँ पूछती हैं कि उनके यहाँ किस चीज की पकौड़ी बनाई जाती है जिसकी शर्माजी रोज तारीफ करते हैं और यहाँ की पकौड़ी उन्हें पसंद हीं नहीं आती। तब चौबेजी हँसते हुए बताते हैं कि 'वह तो मछली की पकौड़ी थी।" अतिथियों के स्वागत के लिए चाय-नमकीन का प्रयोग अब होने लगा है।" 'अपने लोग"दूसरा घर'और 'परिवार' उपन्यास में इसका चित्रण हुआ है।" 'अपने लोग'उपन्यास में ओझाजी के साथ रहने वाले लट्ठधारी लोग अहरा सुलगा कर उस पर लिट्टी सेंकते हैं। अर्थात् यहाँ लिट्टी-चोखा खाने वाले लोग भी हैं। 'अपने लोग'उपन्यास का प्रमोद देखता है कि भरे बाजार में पढ़े-लिखे लोग ककडी खा रहे हैं और वह ककडी खाने में संकोच कर रहा है और पास पड़ोस के गाँवों में पान खाना, खाना-पान का एक अंग माना जाता है। रामदरश मिश्र जी के उपन्यासों में गोस्त, शराब, गांजा, सिगरेट, बीड़ी आदि मादक पदार्थों के सेवन का भी उल्लेख हुआ है।

वेशभूषा भी स्थानीय संस्कृति का उद्घाटन करती है। लोगों की वेशभूषा देख कर बताया जा सकता है कि वे किस क्षेत्र के निवासी हैं।'अपने लोग' उपन्यास में विभिन्न स्तर के लोगों की भिन्न-भिन्न वेशभूषा दिखाई देती है। इसे तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। निम्न वर्ग के गरीब अनपढ़ लोग हैं जो कंधे पर तौलिया लटकाते हैं, धोती-कुरता और चप्पल पहनते हैं। इन्हीं देहातियों में कुछ पढ़-लिखकर अपनी आर्थिक स्थिति सुधार लेते हैं। ऐसे पढ़े-लिखे देहाती उटंग धोती और लंबा कुरता पहनते तथा पगड़ी बाँधें, कंधे पर ट्रांजिस्टर लटकाये रहते हैं। आर्थिक दृष्टि से संपन्न अपढ़ देहाती टेलरिन के पैंट, बुशर्ट पहने, मोजा और बूट डाटे, आँखों पर काला चश्मा लगाते हैं। इसी तरह शहरों के कल-कारखानों में बोझा ढ़ोता हुआ मजदूर देहाती व्यक्ति, कचहरिया देहाती, ग्रेजुएट देहाती, वकील देहाती, साहित्यकार देहाती कुली, देहाती और देहात और शहर उसमें दिल्ली, कलकत्ता बंबई, मद्रास आदि जगहों की वेश-भूषा भिन्न है।

'दूसरा घर'उपन्यास में डिलाइट कॉलेज में कमलेश देखता है कि एक लड़की धीरे-धीरे टहलती हुई उसके सामने से गुजरती है। वह फ्रॉक पहने हुए है. घुटने तक उसकी मोटी-मोटी टाँगे दिख रही है और ऊपर के मोटे-मोटे वक्ष का ऊपरी हिस्सा काफी दूर तक खुला हुआ है। कमलेश को लगता है, अहमदाबाद की लड़कियों में बड़ी बेपर्दगी है। अपने यहाँ तो लड़कियाँ सलवार या साड़ी पहनती हैं और आँचल या दुपट्टे से उनका वक्ष ढका होता है किन्तु जब से यहाँ आया है यह दृश्य देख रहा है। इसी उपन्यास के शास्त्रीजी झोलदार खादी परिधान पहनते हैं। इनकी वेशभूषा व्यवहार में बहुत अंतर है। सतीश सरपंच हैं, कुरता पहनते हैं तथा छड़ी लेकर सिवान खेत पर जाते हैं।'"बीस बरस'उपन्यास के अतुल पाठक खादी की धोती, खादी का लम्बा कुर्ता पहनकर दामोदर से मिलने आते हैं।" और उनके पवित्र हस्ताक्षर के बहाने ग्यारह रूपये हनुमान मंदिर के लिए चंदा ऐंठ लेते हैं।

वेश-भूषा का जीवन-स्तर पर भी प्रभाव पड़ता है। अमीर घर की लड़की जब गरीब या मध्यवर्ग परिवार में ब्याही जाती है तो उसके सामने बड़ी समस्यायें उत्पन्न होती है। 'रात का सफर' उपन्यास की ऋतु के सामने भी इसी प्रकार की समस्यायें हैं। इसके विपरीत जब गरीब परिवार की बेटी अमीर घराने में ब्याही जाती है तोउसके सामने तरह-तरह की भोग-विलास की वस्तुएँ और सजने-सँवरने के साधन उपलब्ध रहते हैं। तब वह उनका उपयोग करने में भी संकोच करती है। 'थकी हुई सुबह'की लक्ष्मी गरीब घर की लड़की है। उसका विवाह संपन्न वकील परिवार में होता है। उसके आगे तमाम अच्छी साड़ियाँ हैं, जेवर हैं, श्रृंगार के अनेक प्रसाधन हैं। सजने-सँवरने का मन उसे भी होता है, लेकिन गाँव की मिट्टी से बने उसके मन में जो एक सादगी है वह उसे वह वीभत्स श्रृंगार से वर्जित करती है। जो उसकी सासजी करती हैं और उसे सिखाती हैं।" वकील साहब के घर के सम्पन्न माहौल के बाद मायके की गरीबी उसे चुभने लगती है। पिताजी और माँ के तन के कपड़े उसे दर्द से भर देते हैं।" सागर के घर छोड़कर भाग जाने पर लक्ष्मी फिर से पढ़ाई की

शुरूवात करती है। मास्टरनी की नौकरी करती है। पहली तनखाह से तीन धोतियाँ और दो साड़ियाँ खरीदती है। एक धोती मास्टर बाबूजी को देती है तो वे आश्चर्य से उछल पड़ते हैं- 'ना ना बेटी ना, अरे मैं तुम्हारा ससुर हूँ। मुझे देना चाहिए। मैंने तुम्हें दिया कुछ नहीं, उलटे तुमसे धोती ले लूँ। ना बेटी ना, यह नहीं होगा।"

गाँवों में गहने के रूप में हँसुली का प्रयोग किया जाता है। जो गाहे-बगाहे जरूरत के अवसर पर काम में लाई जाती है। हँसुली ग्रामीण स्त्रियों के गले की शोभा होती है। 'पानी के प्राचीर'उपन्यास का मुखिया बैजू को दरोगा की गिरफ्त से छुड़वाने के लिए बैजू की माँ से रुपये माँगता है। बैजू की माँ के पास रुपये नहीं रहते हैं तो वह अपनी हँसुली मुखिया को देती है।" मुखिया हँसुली बेचने का बहाना कर उसे अपने पास ही रख लेता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि अफाट गरीबी में लोग अपनी जीविका चलाने के लिए अपने घर के अरतन-बरतन, गहने सब कुछ बेंच डालते हैं।

विवाह और दाम्पत्य संबंध समाज रचना के दो आधारभूत स्तंभ है। विवाह की नींव पर दांपत्य संबंध टिका है। स्थानीय परिवेश के अनुसार विवाह की उम्र निर्धारित रहती है। 'पानी के प्राचीर'उपन्यास की लीला तेरह साल की हो जाती है। पाँडेपुरवा गाँव में यह लड़कियों के विवाह की अवस्था है। जबकि मिलिन्द भाई कहते हैं कि शहरों में लड़कियों के विवाह की अवस्था बीस-बाईस की उम्र में होती है। और बहुत सी तो कुवांरी रह जाती हैं। लेकिन गाँव में तो लड़कियाँ जहाँ बारह के पार हुई कि लोग कानाफूनी शुरू कर देते हैं। नीरू सोचता है लीला अभी छोटी है तो क्या हुआ, एक साल में पूरी औरत बन जायेगी। लड़कियाँ भी जब बढ़ती हैं तो रुकना जानती ही नहीं। कहाँ से आयेगा पैसा उसके लिए।"विवाह के लिए दहेज सबसे बड़ी समस्या है।

निष्कर्ष

अस्तु कहा जा सकता है कि, रामदरश मिश्र के उपन्यासों में विस्तृत रूप से स्थानीय संस्कृति के दर्शन होते हैं । इन स्थानीय संस्कृति में रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान वेश-भूषा विवाह एवं दांपत्य सम्बन्ध, उत्सव एवं त्योहार विधि और निषेध, विश्वास और मान्यताएं आदि का चित्रण हुआ है । जो आगामी समाज की अमूल्य धरोहर सिद्ध होगी ।

सन्दर्भ

1. सूखता हुआ तालाब: लेखक::रामदरश मिश्र, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी (१९६१) पृष्ठ ९
2. सूखता हुआ तालाब:लेखक::रामदरश मिश्र, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी (१९६१) पृष्ठ ६५
3. पानी के प्राचीर: लेखक::रामदरश मिश्र, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली (१९७०) पृष्ठ १९
4. जल टूटता हुआ: लेखक::रामदरश मिश्र, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली (१९७०) पृष्ठ २४
5. जल टूटता हुआ: लेखक::रामदरश मिश्र, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली (१९७०) पृष्ठ २७
6. दूसरा घर: लेखक::रामदरशमिश्रवाणी प्रकाशन, दिल्ली (१९८६), पृष्ठ १९२
7. दूसरा घर: लेखक::रामदरश मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली (१९८६), पृष्ठ २७२
8. बीच का समय: लेखक::रामदरश मिश्र, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली (१९७०)पृष्ठ ६८
9. बिना दरवाजे का मकान: लेखक::रामदरश मिश्र, प्रभात प्रकाश, दिल्ली (१९८४) पृष्ठ २८।0020